TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4374

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ॐ॥ अथ उपदेशछतीसी लिष्यते। अथ जिनस्तुति कथनं सवईया॥१॥ सकल सरूप जामें
प्रभुता अनूप भूप काया माया हे न जैसे जगदीस है। पुन्य है न पाप है न सीत है न ताप है न जाप केप्र
ताप के है कर मकी न मैन है। ग्यान को अगंज पुंज सुषद प्रपको निकुंज अति ही चोतीस अति सेव चन नै पवी
स है। ऐसो जिनराज जिनहरष प्रणमित उपदेश की छतीसी कहुं सवईये छतीस है॥१॥ अथ अथिर॥
मनुष्यतां सवईया॥ अरे जीव काची नीची ताकूं परिक्रमा रहे है तो [illegible] तिगति कूं जोर सेज्यां नी है। [illegible]
[illegible] जो नेता है रहगी [illegible] करि रसोया मेरे तिमांनी है। ग्यान की निजरि बाली देषि नकूं है
तेरा मोह एह मेंठ कां नीज़रयो चापनानी है। कहे जिनहरष नहनत जो गीबार कागद की पुरी को बुंद है
जलपानी है॥२॥ अथ काया स्वरूप कथनं सवईया॥ काहे काया रूप देषि रसन करे हे मूढ छिन में बिगर जाय
बाम हे असार की। बहु पंकजा की जाणजो सो नव नने तरु कछि यत कद नहिं की सम्र्ह जी अपार की। बात है।
[illegible] लोक मां दिसै थो कहे रूप नांहि दिवत हो आये जात करणदी दार की। कहे जिनहरष विगर गई पल क
में ऐसी सब काया होती सनंतकुमार की॥३॥ पुनः॥ काया स्वरूप कथनं सवईया॥ काया है अ सुधी वांमें रे
त की मढी है नाम चाम सों गढी है नूया बंधी न सा जाल सुं। गैर रलो स्तकं नके यन केव धजुं रुधि न संजरी
र बकूं तजं जाल सं। खेत मा को गए मल मूत्र कं बांधी है देह निकसि आस जन वार पर ना लसुं। ऐसी देह
या ही के स ने स्ने तो न यो अंध के हे जिनहरष में मेह काल सुं॥४॥ अथ लोभ सरूप कथनं सवईया॥ माया जो 1
रि ने कूं जीव तल फत है चारी दियत मि जाय परदेस परसें मजू। जगमें जिल जवे वेल ज निधमां हि पैये तो

नकामरोसागाहै गिरपरसूंमजू॥ नूपसेहेप्पासमेहै दुर्जनकीध्रासस हैताप्रतमानआनत्रोरिहैमं
मजू॥ ऐसो लोनीलोनकेजीयतेक्रुघसहै कोरिकहैजिनहरखनजांणेहेक्रिमंमजू॥५॥ अथक्रोधकथ
नेसु०३॥ कोधिक्रोरिमेरे ज्ञानीक्रांतिकीसहिनांलीड़हैवीतरागवांणीसंगहिलीजीये। क्रोधतें समेता
कूंटसंणप्रेमतेअकूटकोधतेसुजसमांहिअधमगिणीजीये। चंदकसूरीसकुंपोकोधनतेदेषदसोतपस
बहरिगयोयेदमकरलीजीये। द्वारिकाकोकोकीयोदहदीपायनक्रोधवाहप्रेयाकोधकहैजिनहरखनकी
जीये॥६॥ अथमानदूषणकथनसु०३॥ अथमनकरिमानमानकीयोहैहेतनमानमेरीचीममानसकथा
हीमानरामांनतेरावणरजलकासुगयाचेकजकीयोहैजकाजललागईसब्रुआंणदा ज्योंधनमांनक
रिहारीयबधरअरिमांनतेगयोहेमुंजबाजरीकीबांधियेकहेजिनहरखनमांनमनमेनआणिआणे
नोदयारणलङ्जेधोमांनक्रोणे॥७॥ अथमायादूषणकथनसु०३॥ मायाकाहेकरेमूढठोरठोरमायाकीहु
कमायानलीनोहिर्योपिंजाहूहेविचारीहु॥ नासिषेहेमिजसाचारप्रीतमेवदेविकारसजनाईछूटेछूटेसा
रीहु॥ मायाङ्ठतेंहूटमूंटकपरद्वपनजंटमजिनाथमायासापनुयोवेदनारीहु॥ मायाङरगनिवारमे
रिकउकसंकपरकहैजिनहरषसुंकहेसकविकारीहु॥८॥ अथलोभदूषणकथनसु०३॥ मायाकाहे।
कंवदावेकाकुकनसाधिआवेआइनेआवेमीदचचितमेंविचारीके। माय्याकराचेचीसलाखपैनि
यदीयनमूमगहेदहैआगिवोरजहैमारिके। सुमनलसोमुंरातिकारमीकैवानजातहैसीपांयाकुंनदे
वेत्रांपिनउधारिके। कहेजिनहरषरथरिकसरहतमेरेयारनंदरायकुंयंजारिके॥९॥ अथपरंक्ताकस्वा

रसवरूपकथनसु०३॥ योतोहेसंसारसविकारकलुसारनहीदीयतोहेमेरेयारछारजुंआसारसुंाकोहेय
पदाथरहेकाहेकुंहंडुषमहेकाहेममतूजोअमनूकाहेअपारीजू॥ जासुंहेकहतसकषसोतोङषरूपमा
हीमायीमेमेरहीलागमिवाईमकारजूकहेजिनहरषनउमिसकेथकेपरीतकेचिकूंओरऐसोजांणिजेसंसा
रीजू॥१०॥ अथअणसिप्रसतकथनसु०३॥ जीवकूंजोमारेनरपातिककोसोउघरपरसवकोनहरेमहाजमरगणजू
नतीदयानावेसकविकबकुनपावेमांणवाहेऐसेजुंकपोतकूंयीवांप्रसुषायेतोउपरमंसलामेनहीधर्म
अयवंसवनजारिवेकुंपावकप्रमाणजू॥ डरगतिवायवाकूंसकगठिनवंमताकूंडषहैकहेजिनहरषसुजा
णजू॥११॥ अथमृषावादकथनसु०३॥ झूंठीमेरेकरजोरतोसांमेंकरुंनिहोरमृषावादछोरिसकोजनसवादरोव
चनसकेनबोलमिथ्यसवतिहोलकीरतिजेहैअमोलअंगउदमादरे। बदमकीगंधदूरगंधसहजिनवंधअंध
कंधधंधहीमिमतिछविकादरे। कहेजिनहरषनमांनयनमांनअम्पांनबंधहेजाथेओरोमृषावादरे॥१२॥ अथअ
दत्तादानकथनसु०३॥ लहेओअदत्तामममवामेरजामहारहेततांफिरेलोरजुंकचितानांहिंचेनजू॥ कजंनवेसा
सरलाहिआयपायधनजायलमकरेहरेसबकोईवाकेयेनजू॥ चोरसोकहतवेनावेकउकलंककलावेकावेसु
पजयपावेपापजरेनेनजू॥ कोउनप्रतीतधरेपातिकसोंजाइजरेकहेजिनहरषअवणसंहणिवेनजू॥१३॥ अथमे
थुनकथनसु०३॥ कांमनीसंकरुचिजोगहिलिमिलिकेसंजोगमांमेयकपयबलोकमांमलेवेठाकजू॥ तासुंजागि
रहेमतावंधेहैकरमचलायरअवडुषमंलफलेहैकिंपाकजू॥ आपसंकजंनसूकेकरमजालमेंअरुकेविषय
नमेंअमूकेसकेनवेपाकजू॥ कहेजिनहरषनकांमतेंबचेहैमांमअजलंगकीधेपरेछोरराकजू॥१४॥ अथपरिग्र
हकथनसु०३॥ परिग्रहेछांरिदक्रसकयुसकीयीपजेसुवंमंपरेहेकाहेरहेनिरवंधरे। परिग्रहनीरपरसोलोहुंआ। 2

जीरनजरयो निकसिसकेनअमरयो हंतो मयो अंधरे। ये तो हैकवि नअंगति छनजैसो निर्षगअंगरयालयं
गछहूत को बंधरे इंसोपरिग्रहज्ञोरिरहेतो अथं हतेरे केहे जिन हरषअमिकसबबंधरे। १५ अथरात्रिभोजन
वजितिक०रश०रा रैणबोरवहै वास्यबरो किरहेघाटरैणपसूअनगलबंधनबंधाईये। पितरमके लेपिंड
कोलिमा अर्षपंक दंक दांन सील तप भाव धर्म नपाईये। मूलकनजारीयतसुंइमेनगारीयतयतीयनकावगहेह
जानस्याईये। अनमांभ्यमवरिजो हुंजलएकरेरैणजिनहरषभोजनके येबाईये। १६ अथदांनमहिमा
कथनं। य०रा२। देक दानकी षमांनदांन तेंअचलथांनरावराणा देहेदांनरंपानी दांनदेकरे। सवात्मारकंचन।
करनदीधोचीथोजसदांन ते विक्रमनजयो सजसकोगेहरो भोजमुंज विद्याकुंज दांन तें नरअंगजबलिरउआगे
हरिथरादांनलेहरे। चीरीअवनतन ते लुनायदीयो विप्रसकतदांन तें वधे हे जिन हरष बस न हरे। १७ अथसीलप्र
रूपाक०य०र१। वेद को करईया मसजन को मरईया अपजस को हरईया कोथजस्यो हीरलुवहे। तपको गमईया
जोग जोग को समईया न दीनोरंसुनमईया श्रम ये ममेस हेलहे। शूद्रको पमेयारंगरासको रमेयास अनागर
नमेया नयारथहाो मेव हेजहे अनसोडराचारी मारीनारदलहरहे मोष सील तें जिल जिन हरष कहुवे है। १८
अपक०रूप०र२। सदिढपरूदीनोरमहापातिकी अघीरक्षार हत्याकीनि जोरमाझकारनंदजू। आजुनमाला
गारमोगरहथ्यारयहिषट नरनारिएकरतिनिकंदजू। ओसेमहापापीहितंतपतें तरेहेसोउसबैसकरनर
हरकेयीकें आणंदजू। विसनेकामर जिन हरष जोध्याणलाषरूपकीयो तपकुंतेचा थोनामवंदजू। १९ अथ
भावमहिमाक०य०र२। असनवंद मुनीश्वसंयमगहिउगरोसकेवलीजयोहेसबकरमषपाइके। इलाउत्रवं
सपरिमेलेहे हरषधरिकेवल पासोसपरिपातमनलाइकै। कूरगडूअणगारके वलीकपिलयारसंदकसें २

चीयगइसकक मालन्याइके। कपदरनयोदेवेसकुरगतासरकोगल सेप्रावजिन हरषअचलहीतलाइके।
२० अथअल्प आयुक०य०र२। तेरीहै अल्प आयु हंसो बेल लाहे भावजा लेहे जीवतमेरो कबकूनटैगो।
येतो हैनदीका पूरदिन२ घटै हुरकरतअकाजनहीलाज के से छुटैगो। कंवगतिमांपाले रैहोंगे वलजाण भैरे
आइजमरांणजब तो कुंगहिकूटैगो। कहेजिन हरषमनकोउतेरोरसपालदेषतहीकालद्वालकायाकोटलूटै
गो। २१ अथविष्पाक०य०र२। जागिरे अपनां जाग कालेकंमायासंसागिरलोहेमलतआगि मांहिकाहे
दाकैहे। करिके कपटकोटषे लके अमतारी चोट धनमेलवेकुं पेटदेकेकांमसाकैहे। जोंथे है मैजोरवरमो कर्मं
तकोउनरथनकोकामाउवरपिंमझाणजाकैहै। काकुंककवोरपापकरिकेवंधवेआप आपणीहीलु आप
लूतनेसेबांकेहे। २२ अथएकलाबनाकां०स०र२। काकेकहोमेरेहथीकाहूकेयबलसाथीकाकोपा
लघरालयांदेसमठकोटरे। काहूकोहिरएपहेमकाकीमृगनेणीपेमतातमातेद्यातकाकेरथोटजोटरे। काकेधू
नेधवलहरमंदिरमहलकाकेकाहूकेजंमारअरेएलेसबवोटरे। कहेजिन हरषनकाहुकेनकाकोहुंलीलाथेम
नेचतरआउधरमउटरे। २३ अथधर्मप्रीतिक०य०र३। जेयीनेरीप्रतिग्रातिरहतएकायचितराहियोसपेतिर
होसककमावेहे। रूपकीधरणहरअपछरअर्थहलरअयीनारिदेखिरजेसेमनल्यावेहे। पिंडहूते प्यारेहूत धर
कोरहावेसुतनिरमरजाकोदरयसुलवेहे। जिनवरधर्म जो अैसीप्रीतधरैजिन हरषउरलपरमगतिकुंपावेहे। २४
अथआयुस्वरूपक०य०र२। जैसेअंजुरीकोनीरकोउगहेनरधीरहिनरजाइवीरराषोनरहातहैतिसेंघ
टिजेहे आउकोटिकबरोउपाउथिररहेनहीसहीबातनकीवातहे। अयेजीवजांणिकेसुकृतकरिथरिमन।
समतामेरमतारहैलोनीकीघातहे। अथिरदेहीसंउपगारयोहीसारजिनहरषसुथिरजसकोमभेजलातहे॥ 3

।२५॥अथवीतरागसरूपकथनम्‌॥१॥ जोउ जो मध्यांन धरेकोइ कोन न्याय कनै अजर अवदजरे जोगे हैन
दगा ॥ मननमतानमायाकारमी मिले हे कायार हे पानीमृत धीया अजनमोला गम्‌॥ जोसो हे संसारपाय
हरे हे वनवा मर हत नसदत दयधअजन्योजा गम्‌॥ यरलत्तरज मनराग दोष कोनधन जिनदरषक हे वीतराग।
सू।२६। अथ धर्मकथन॥१॥ गेरउपदेस हेरे आगम उपदेसा धरे विरुध करे नेनवजल निधिपाजहे ।उ
न्यायपदीजं कहे धरमको नेदय हे परिसहसव सहे करो धन सं काज हे। अल्प अरुप सरूप स वउपदि
थर्मानद स गणविधचरण जमाज हे। सा। तिनगतिजिनदरषक हत पथ्य मुग वासीतारवे कं कमुंड जिलज हे।
।२७।अथमहारूद्रसरूपकथनम्‌॥१॥ सरे हे अप्पानी अ निमांनी परवां णीकं एहं तो भववजुमकू रतनसी।
जजरे। करे काल नचेतो अं जोण न तो कुकि मोक्ष वण मिहान सकाणि कर्म दिलसासिहे। आगि हे मनचित।
समताय मे तम हो जहो नेद कहि जिम राणनित पाजहे। अैसे वेण कहे गुरतो उतन धरे उरपाणी मे पाणी जे से कि
धूसरदगा जेहे।२८।अथसुकृतिउपदेसकथनम्‌॥१॥ चो गतिको फेर अैसो पात सुवधूला केसो कंडकायो।
गांनवी चड पत्यो सहीजीये। जहे न विस्ता मनी तजत तकरे री नुमेष मे पसो हीर हे सदेव कहा कीजीये। सु
मतेवनपरदासी धर्मकी जो जेतना सी तो रिके संयारका यीधर्मसि ट ली जीये। धर्मतिन कर्म जा गेभव के घमण आगे
धवीजमा गे जिनदरषक हीजीये।२९।अथसंसारविलवनकथनम्‌॥१॥ जे सघनघोर जो रअ आय मिले विडं
रपवनको फारन घटत नला गेवारज्ञ। थिरनाकोवेग जे से नीर तें व हे तेथें छिन मेहत रिजाइ स मांग अपार हु।
तेसें माया मिले आय उद्यम कीये विनाय सं चीत घटे हत बजे हे क ललारज्ञ। अैसो हे लमासो जिनदरषघनध
नदेखे मिले आइ जोइ ज्यो विचारज्ञ।३०।अथपापफलकथनम्‌॥१॥ पाप तें व दे हे कर्म कं मं तिव हे ज्ञम दोन्या। २

पातिक के बीज रे। अेसे बीज जो उवा वे स कष्ट तक माइ सो वे अेसे ताके फल तो वे वचनपदी अरे अध
मव हे जाति नट कल चो पर रा ति प्रीतम वियोग जो गपल दिखा धीजरे। दरिद वधे हे गेह अपजस कोन थे
हकर जिनदरषक हं सो धीजरे।३१।अथनवकारमहिमाकथनम्‌॥१॥ कषको करण हार दुषको हरण
हर सुगति को देण हार अपउद्धार हार हु। नयको नंजण हार अरि को गंजण हार मन को रंजण हार नित अवि
कार ज्ञ। मोहिनी को मंगली कय मरण निस्तीक मरा मंत्रन ही कमहि मअपार ज्ञ। वन दे हू रव अ सी
वको अ मर जिनदरष अमर निर प्रतिनवकार ज्ञ।३२।अथपुनःनवकारमहिमाकथनम्‌॥१॥ याको स
मरण न यो नाग फी टब्धर णि नंद दंद पद लसो ह्य वनो पतस मार ज्ञ। संबल कं व छ वे लत जिन जिम नमे
कल दीकर ग त्तिये तल सो न वपार ज्ञ। अरि फीट कजन की माल ज इ दिहे रस्त्री मयमती मह अतीक।
सु ऊज बार ज्ञ। यावन उर यकि ऊमर सिखन मो अेसो जिनदरषस मं चनवकार ज्ञ।३३।अथ जीवप
रिग्रहलोभफलकथनम्‌॥१॥ सपनमें अपन मिलेन कर्म कुतार पट पीठ क की नीनृपन पभारि के वीर किंधु
वे रणी रिणी अनेतं अंतक संपतव्य वहुत क रेता लमकु मारि के। वकत फिरे सेना गन कुल ध वले हे फाग गे हे
मां सिट्टू हे इथि लहूं दर मारि के। अेसो परिग्रह जिनदरषन छोर तो न जीवकी कि मिनता इदि यो धूविचारि के।
।३४।अथधर्मपरिखाकथनम्‌॥१॥ धरम धरम कहे मरम न को ऊ लहे जरम में कू जि रहे कु वरुकी जी यो।
उक रूढ वारि के नरम फंद तारि कम न तिग हि मोरि के कर्म्यांन हट हिर हीजीये। दयारूप सोई धर्मधर्मति कहे हे 4

कर्म्मनैदजिनधर्मपीउपरम्मपीजोटै।करिकेपरिष्याजिनदत्तस्रथर्मकीमैकमिकेकसोटजिमैसेकंचनकुं
लीजीयै।३५।अथग्रंथसमाप्तकं०।श्लोक३१।इउपदेशकीछत्तीसीपरिपूर्णचतुरछैजेयाकोमथ्यरस
पीजीयो।मरीदेनलपमठिठो।जीमैकीयैकवितकविताहसोतेजिनग्रंथमानलीजीयो।सरसछैदैवर्षा
णजेउत्तमअवसरजोणिदे।पतीनयाकेजव्यासवर्शयाकरलीजीयो।कदैजिनदत्तसंवतगुणस्रशिनष्फकी
नीछैतुमरूपतरूआ।आयमीकंदजीयो।३६।इतिश्रीउपदेशछत्तीसीसंपूर्णम्।सं०१८५८वर्षेशाके१७२४प्र
वर्त्तमाने।मितिवैशाखशुक्लपक्षेनवम्यां९सोमवारे।लि।ऋषिलिखतम.श्री।।शुभंभूयात्।।